INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

# मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में मानवतावाद

## (Humanism in the Poetry of Maithilisharan Gupt)

**प्रा. डॉ. शर्मिला सुमंतराय पटेल**

हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कार्यकारी आचार्य
श्री रंग नवचेतन महिला आर्ट्स कालेज वालीया
ता. वालीया जि. भरूच

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/07.2023-71553974/IRJHIS2307002

प्रस्तावना :

वेदों उपनिषदों के अतिरिक्त श्रीमद्भागवत, गीता, रामायण, रामचरितमानस मानवतावादी मूल्यों के आधार ग्रंथ कहे जा सकते है। भक्तिकाल के अनेक कवि एवं समाज सुधारकों ने मानवतावादी मूल्यों की स्थापना की जिसमें कबीर, नानक, नामदेव, रामानंद, तुलसीदास आदि मुख्य है। भक्तिकाल के इसी मानवतावादी मूल्यों का विकास हमें आधुनिककाल के द्वितीय उत्थानकाल द्विवेदीयुग में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में दिखाई देता हैं

मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और कविता का मुख्य आदर्श है – मानवता। इसका मतलब यह है दुनिया के सब मनुष्यों को बराबरी का मानना। आदमी–आदमी में कोई भेदभाव नहीं मानना, न रंग का, न धर्म या जात–पात का, न गरीब–अमीर का, न ऊंच–नीच का। माता, पिता एवं परिवार के निकटवर्ती सम्बन्ध के परिणम स्वरुप कवि का धर्म पर अटल विश्वास हो जाता है, और आगे चलकर इसकी परिणति मानवता धर्म में हो जाती है। उन्हों ने अपने समस्त जीवन में मानवता धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ स्थान देने का प्रयत्न किया है। उनके समस्त पैत्रक और पारिवारिक संस्कारो ने उनके धार्मिक व्यक्तित्व का पोषण किया है। उनका समस्त काव्य ही उनकी भाववती दृष्टि का निचोड है।

गुप्तजी के समस्त काव्यों की ओर यदि एक सरसरी दृष्टि डाली जाय तो गुप्तजी का वह विशिष्ट जीवन एवं व्यक्तित्व मुखर उठता है, जिसमें आधुनिकता और प्राचीनता का सुंदर सामंजस्य हुआ है। वे यह ठीक तरह समझते थे कि काल क्रम के अनुसार प्रत्येक बात में यथा संभव परिवर्तन होना आवश्यक है। अत: गुप्तजी की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है– कालानुकरण की क्षमता।''१८ वे विश्व कल्याण की भावना से ओतप्रोत थे और उनकी यही भावना भविष्य में मानवता धर्म की द्योतक ठहरती है। वे अपने वैयक्तिक गुणों के आधार पर ही अपनी साधारणता में असाधारण है।

गुप्तजी जब कविता लिख रहे थे उस समय देश में इस तरह के राष्ट्रीय विचारों की और 'मानव

मानव सब है समान' जैसी भावनाशाली कविताएँ सब भाषाओं में लिखी जा रही थी।

मानवता की बात को मैथिलीशरणजी ने अपनी कविता में किस तरह से कहा, इसके दो उदाहरण यहां दिए है। १९६२ में भारत पर चीन का हमला हुआ तब गुप्तजी ने जो भाषण संसद में दिया था उसकी पहली आठ पंक्तियां यों थी –

''ऋषि दधीचि से गांधीजी तक, मिली हमें जो दिक्षा है,
बंधुजनों, प्रस्तुत हो, उनकी फिर आ गई परीक्षा है।
फिर सब देखें कठिन नहीं निज, तप त्याग, बलिदान हमें,
परंपरा से पाया अपना, रखना है सम्मान हमें।
घर संभालने में तटस्थ हो, लगे हुए थे जब हम लोग,
और चाहते थे जब सबका, पंचशील सम्मत सहयोग।
तभी पड़ोशी चीन अचानक, होकर लोभ पाप में लीन,
चला हमारी भूमि छीनने, तन का मोटा मन का हीन।''१

केवल देश पर आक्रमण से गुप्तजी व्यथित नहीं हुए। उन्होंने ऐसे अनेक विषयों पर लिखा है जो विश्व की राजनीति से संबद्ध थे।

गुप्तजी ने अपने जीवन में कभी इस तरह का मनुष्य मनुष्य में भेद नहीं माना। वही बात उनकी कविता में भी दिखाई देती है।

संसार में वे 'एक राज्य' के समर्थक थे। इसीलिए आफ्रिका के निवासियों संधर्ष पर भी उन्होंने लिखा और फीजी में भारतीय कुलियों की दुर्दशा पर भी।

'विश्ववेदना' में उन्होंने लिखा–
''विश्व का एक विधान समर्थ
छिन्न कर भिन्न भावना व्यर्थ,
कराता है जो अखिल अनर्थ,
हाथ में करके सारा अर्थ,
उठाकर रक्षण शिक्षण भार,
करे सबका समान उद्धार।'' २

इस तरह हम देखते हे कि गुप्तजी उसी तरह से सोच रहे थे जैसे और भारतीय कवि। पर अन्य भाषाओं में इतनी बोलियाँ नहीं थी। वे भषाएँ एक–एक बड़े नगर जैसे कलकत्ता, मद्रास, बम्बई के आसपास बोली जाती थी। राष्ट्रकवि जो हिन्दी में कर रहे थे, उन्हीं विषयों पर रचना था चुनौतियों का सामना और भाषाओं में भी बड़े कवियों ने किया पर हिन्दी के कवि के साथ तीन ओर समस्याएँ थी–

हिन्दी में व्रज भाषा से खड़ीबोली में कविता के रचना रुप का परिवर्तन हुआ, जो अन्य भाषाओं में नहीं हुआ।

हिन्दी कविता को अपना पाठक समाज भी निर्मित करना पड़ा और प्रदेशो में जैसे कलकत्ता,

मद्रास, बम्बई में १८५७ में ही विश्व विद्यालय स्थापित हो गए थे और साक्षरता बढ़ चुकी थी।

समाज में परिवर्तन की गति हिन्दी भाषी समाज में इसलिए धीमी थी जो कृषि से औद्योगीकरण, यंत्रीकरण और नागरीकरण की ओर विकास धीरे धीरे हो रहा था।३

इन सब बाधाओं के होते हुए भी मैथिलीशरणजी ने मानवतावाद हिन्दी कविता द्वारा प्रचारित—प्रसारित किया। उसका एक छोर वैष्णव भूतदया और दूसरा बौद्ध करुणा और मैत्री का समन्वय था। सामंतवाद, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद ये सब मिलकर इस 'समता' के भाव पर चोट करते थे। वे भारतीय समाज को टुकडों—टुकडों में बांटकर राज करना चाहते थे। गुप्तजी की हर रचना में यह बात डंके की चोट पर कही गई है जो महाभारत में व्यास ने हजारों बरस पहले कही थी —

मैं रहस्य की बात तुम्हें बताता हूं — मनुष्य से बढकर कोई धर्म नहीं।

मैथिलीशरणजी ने 'दिवोदास' में इसी बात पर जोर दिया। प्रजापति ब्रह्मा ने कहा —

''मेरी कृति में मनुष्यत्व से श्रेष्ठ अन्य कुछ नहीं।''४

'रामराज्य' की कल्पना 'साकेत' में यों दी गई है, राम के मुख से —

''सुख शांति हेतु मैं क्रान्ति मचाने आया,
मै आया उनके हेतु जो कि तापित है,
जो विवश, विकल, बलहीन दीन, शापित है।''५

राजा होकर गृही, गृहि होकर संन्यासी। प्रकट हुए आदर्श रुप घट—घट के वासी—यही उनकी आदर्श राजा की कल्पना है। वे सब तरह के विचारों को पनपने की स्वतंत्रता देना चाहते है। पर मैथिलीशरणजी तुलसीदास की ही तरह 'मर्यादावादी' है, वे लिखते है —

''जितने प्रवाह है, बहें — अवश्य बहें वे,
निज मर्यादा में किन्तु सदैव रहें वे।''६

'पृथ्वीपुत्र' काव्य में इस मानवतावाद के दर्शन होते है। वे लिखते है— सचमुच इस लघु काव्य में विश्व—मानव के नवीनतम अनुभवों का विस्फोट हुआ है। 'पृथ्वीपुत्र' विश्व साहित्य की कृति है। न केवल एक देश किन्तु सारी मानव—जाति की सबसे बड़ी समस्या पर इसमें आत्म निरीक्षण किया गया है। युद्ध से युद्ध को समाप्त करने का दर्प सीधा पागलपन है। माता— भूमि अपने पुत्र से कहती है कि—

''बालक भला था आज पागल हुआ है तू
नाम कुछ और हाय काम कुछ और है।''७

सचमुच नाम मानव का और काम दानव का — यही आज मानव की स्थिति है। माता के अभिशाप से घबड़ाकर पुत्र प्रश्न करता है —

''तो क्या चाहती है तू बता दे यही मुझको।''८

इस प्रश्न का उत्तर किसी एक देश के विकास में नही, मानव जाति के विकास में है। मानव जाति इतिहास की दीर्धकालीन यात्रा के जिस मोड़ पर पहुंची है, वहाँ प्रात: कालीन क्षितिज पर उदित होते हुए बालसूर्य के समान विश्व—मानव का जन्म हो रहा है। हमें जो राष्ट्रीयता दीख रही है उस सबका सफल

पर्यवसान मानवतावाद में प्रस्फुटित हो रहा है। उसकी सच्ची स्वीकृति और अवलंबन से ही अब जीवन की सफलता संभव होगी –

''जो सबको लेकर चल सके, सच्चा वही समर्थ है।''९

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में जो मानवतावाद है वह हर व्यक्ति की स्वतंत्रता चाहता है। 'किसान' में वे कहते है कि फिजी के बंधुआ मजदूरों की दशा सुधरे। वे भारत की स्वतंत्रता के संग्राम में प्रत्येक वर्ग की स्वतंत्रता के हामी है। वे धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता के पक्षपाती है। वे प्रांतीय भाषाओं के विकास के समर्थक है, पर राष्ट्र में राष्ट्रभाषा के भी पोषक है। वे जानते है कि भारत में अनेक छोटे–छोटे राज्य समूह थे और है पर वे सबके ऊपर आनेवाले एक ही संकट के समय आपसी भेदभाव भूलकर एक हो जाते है – 'हिन्दू' में वे लिख चुके थे–

''युद्ध मध्य पांचाल, पुलिन्द,<br>
चेदि, कच्छ, कश्मीर कुलिन्द,<br>
द्रविड, भद्र, मालव, कर्नाट,<br>
महाराष्ट्र, सौराष्ट्र विराट<br>
कामरुप किंवा, आसाम,<br>
सातो पुरियां, चारो धाम,<br>
अटक–कटक तक एक उमंग<br>
दु:ख में सुख में सब है संग।''१०

यह स्वतंत्रता, समता, बन्धुभाव का फ्रेंच राज्य – क्रान्ति का आदर्श वे स्वराज्योत्तर नेहरु–युग के प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद के आदर्शों में परिणत करना चाहते है। उनका विश्वास है कि भारत पुन: दुनिया के देशों का अगुआ और उन्हें प्रकाश देनेवाला महान राष्ट्र बनेगा। अंतत: विश्व के देश आपसी मन–मुटाव, वर्ण–द्वेष, धर्मांधता, अनावश्यक हिंसा, अणु'अस्त्रों की दौड़ से तंग आकर एक ऐसे बिन्दु पर आ पहुंचेगी जहां सत्य और अहिंसा के, साधन–शुचिता के और श्रम की प्रतिष्ठा के गांधीजी द्वारा दुहराए गये नैतिक मूल्य ही सब को मान्य होंगे।

जब इन मूल्यों को मानवता अपनायेगी तभी गुप्तजी के विचार में केवल भारतवर्ष में ही नहीं, केवल एशिया में ही नहीं सारी दुनिया में 'गूंजे हमारी भारती'– यह कवि वाणी सार्थक होगी। आज से पचास वर्ष पहले इस बात की कल्पना कर लेना कवि के भविष्य–दृष्टा होने के पुराने विश्वास का ही एक ज्वलंत प्रमाण है। गुप्तजी के 'जय भारत' का युधिष्ठिर ही अधिक से अधिक मानवता का सर्वोत्तम दृष्टान्त है। ११

मानवता धर्म पर बल देते हुए 'सिद्धराज' कृति में भी हिंदू मुसलमानों के पारस्पारिक धार्मिक कलह पर क्षुब्ध होकर गुप्तजी ने स्पष्ट घोषणा की है कि ईश्वर एक है, उसे विविध रुपो में पूजा जाता है। अत: ईश्वर के नाम पर कलह करना उचित नहीं है वह तो भक्त के भाव का भूखा होता है। ''सिद्धराज'' मुसलमानों से कहते है –

‘‘कह दो पुकार कर तुम वह एक,

ओर हम पावे उसे चाहे जिस रुप में

ईश्वर के नाम पर कलह भला नहीं,

देखता है, भाव मात्र वह निज भक्त का।’’ १२

इस तरह गुप्तजी ने एक ईश्वर में दृढ़ विश्वास एवं श्रद्धा प्रकट की और समस्त धर्मियों को अपने काव्य में एक ही स्थान देने का निरंतर प्रयास किया।

‘पृथ्वी—पुत्र’ गुप्तजी का आधुनिक सभ्यता को आधार बनाकर सृजित पद्य—नाट्य है। कवि ने मानवतावादी और शांतिवादी मान्यताओं को आधार बनाकर यह संदेश दिया है —

’‘उठ, बढ़, ऊँचा चढ़ संग लिए सबको,

सबके लिए तू और तेरे लिए सब है। ’’ १३

इस कृति में माताभूमि और पृथ्वीपुत्र क्रमशः मानवता और यांत्रिक सभ्यता के प्रतीक है। पृथ्वीपुत्र पाश्चात्य पूँजीवादी सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। वह स्वयं को पूर्ण सभ्य और सुसंस्कृत मानता है। वह युद्धोन्मादी है।

माताभूमि पृथ्वीपुत्र को उसकी हिंसक प्रवृति से मुक्ति दिलाने के लिए उसे विश्व मानव बनने अपनी व्यष्टि को, समष्टि को समष्टि में विलीन कर देने का आदेश देती है, क्यों कि इन्हीं शुद्ध भावना ओं के द्वारा मानव कल्याण संभव है।

‘विश्व वेदना’ युद्ध विरोधी सांस्कृतिक गीति रचना है। इस कृति में कवि विश्व के लिए चिंतित है, वह कामना करता है कि —

‘‘आज के योग्य, एक अविभाज्य

विश्व को मिले राम का राज्य।’’ १४

गुप्तजी की दृष्टि मानवतावादी है इसलिए वह विश्वव्यापी मानव संस्कृति की प्रतिष्ठा चाहते है। इसलिए उन्होंने विश्व राज्य की कल्पना की —

‘‘विश्व का एक विधान समर्थ, छिन्न कर भिन्न भावना व्यर्थ,

कराता है जो अखिल अनर्थ, हाथ में करके सारा अर्थ,

उठाकर रक्षण शिक्षण—भार करे सबका समान उद्धार।’’१५

‘जयभारत’ महाभारतीय कथा प्रसंग पर आधारित महाकाव्य है, जिसमें आदर्श मानव धर्म की स्थापना हुई है। युधिष्ठिर कहते है —

‘‘राम अब भी मैं यही कहता हूँ मन से,

कामना नहीं है मुझे राज्य की व स्वर्ग की,

सब सुख भोगें, सब रोग से रहित हो।

सब शुभ पावें न हो दुःखी कहीं कोई भी। ’’ १६

उपर्युक्त विवेचन से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि गुप्तजी ने अपने काव्य द्वारा जिस धर्म

का प्रचार—प्रसार किया वह था 'मानवता धर्म।' उनका कहना था कि भारत वर्ष में निर्मित एवं प्रचलित विविध धर्मो को उचित स्थान देना यही मानवता धर्म का प्रतिक तथा मुख्य कर्तव्य है। इसके लिए वह स्वयं भी प्रयत्नशील थे। उन्हों ने जान लिया था कि सभी धर्मो के समन्वय से ही मानवता धर्म की उत्पति होती है। लोक कल्याण के लिये इस जगत में एक ही ईश्वर है। यदि उसकी प्रार्थना एकाग्र चित एवं श्रद्धा से की जाती है तो मनुष्य जीवन पुण्य पावन हो सकता है । उनकी समस्त काव्य कृतियों की मूल प्रेरणा इसी व्यापक धर्म भावना में दृष्टिगोचर होती है।

**संदर्भ सूची —**


1. हिंदी साहित्य के निर्माता मैथिलीशरण गुप्त — प्रभाकर माचवे पृष्ठ ७४
2. विश्व वेदना —
3. हिंदी साहित्य के निर्माता मैथिलीशरण गुप्त — प्रभाकर माचवे पृष्ठ ७६
4. दिवोदास — पृष्ठ १०
5. साकेत अष्टम् सर्ग — पृष्ठ १४५
6. वही — पृष्ठ १४३
7. पृथ्वीपुत्र — पृष्ठ ४०
8. वही — पृष्ठ ४०
9. वही — पृष्ठ ४०
10. हिंदू — पृष्ठ ४१
11. हिंदी साहित्य के निर्माता मैथिलीशरण गुप्त — प्रभाकर माचवे पृष्ठ ७८
12. सिद्धराज— मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ १०९
13. पृथ्वीपुत्र— मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ ४०
14. विश्व—वेदना सूचना — कवि लिखित — १
15. विश्व वेदना — मैथिलीशरण गुप्त ४६
16. जयभारत — मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ २८७